आँसूओं से बचकर

प्रो. डॉ. (श्रीमती) प्रेम सिंह

आँसुओं से बचकर

प्रो. डॉ. (श्रीमती) प्रेम सिंह

प्रो. डॉ. (श्रीमती) प्रेम सिंह

(जन्म से दृष्टिबाधित)

प्रकाशित पुस्तकें :

आलोचना :- 1. नई कहानी में वैयक्तिक चेतना, 2. आधुनिक निबंध साहित्य में मनोवैज्ञानिक उद्भावनाएँ, 3. साठोत्तर कहानी और परिवर्तित मूल्य, 4. समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज, 5. मानवतावाद की अवधारणा और भवानीप्रसाद मिश्र का काव्य।

कविता संग्रह :- 1. बर्फ के टुकड़े, 2. आलाप, 3. मैं... अपने साथ, 4. उजास, 5. तराना,

कहानी संग्रह :- 1. मैं गवाह हूँ, 2. आह्लाद।

स्फुट विचार :- 1. अन्त: सलिला, 2. मुकुर, 3. दीप से दीप जले।

सम्मान :- 1. राष्ट्रीय पुरस्कार (समाज कल्याण मंत्रालय) भारत सरकार 1985, 2. दिल्ली राज्य पुस्कार (दिल्ली प्रशासन, दिल्ली) 1984, आल इण्डिया कन्फड्रेशन ऑफ द ब्लाइंड गोल्ड मेडल, 2002, 4. हिन्दी अकादमी दिल्ली साहित्यिक कृति सम्मान, उजास 2005, 5. राष्ट्रीय पुरस्कार 2012।

सम्प्रति :- हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

किताब के बारे में...

यूँ जैसे हँसना स्वास्थ्य के लिए गुणकारी होता है वैसे ही आँसुओं के कतरे भी कतरा-कतरा ही सही समस्याओं का समाधान करते हैं और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो रोना दुःख मुक्ति का उपाय भी है।

स्व और पर के आँसुओं के कारणों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। समय का भेद है कि किसी ने किस वजह से कब आँसू बहाये और किसी ने तब पोंछे और जब उसने बहाए तो किसी ने पोंछे। उस पोंछने में रूमाल, हाथ और कन्धे का अन्तर बहुत बड़ा कारण है जिसे एक आँसू या आँसुओं की बाढ़ से समझा जा सकता है।

इस संग्रह की कविताओं में बहुत बार आँसुओं का जिक्र है। यह चर्चा कभी आँसू बहाकर की है तो कभी आँसू पोंछकर। बचपन में मुझे दरवाजे के पीछे छुपकर रोने की आदत थी जो सम्भवत: स्थानाभाव के कारण रही होगी, परन्तु बड़ा स्थान मिलने पर बड़े से बड़ा कमरा भी दरवाजा बन्द करके रोना अच्छा लगता रहा। ऐसा नहीं हुआ कि अपना रोना तो छुपकर रोया हो और दूसरों का रोना दूसरों के सामने। रोना तो रोना है सावधानी न बरतने पर किसी के समक्ष भी क्रियान्वित हो जाता है।

''उन्हें समर्पित जिन्होंने कुछ

अधिक आँसू बहाए हैं''

अनुक्रम

'कैसे कहूँ' 19

मैं कब कवि नहीं होता 21

कहना तो है 22

विनय की कविताएँ

मैं तेरी अनगढ़ रचना हूँ 24

बंजर धरती चीरकर निकल आती हैं 26

पक्ष-विपक्ष किसी का नहीं 27

बंधन 28

साथ रख 29

दर-बदर क्या भटकना 31

चुप हो जाना 32

एकान्त 33

कोई-कोई बात 34

एक शब्द 35

मेरे साथ वालों को 36

तुम्हारे दर्द से सुख मिला उसे 37

होली 38

मैं बहुत बड़ा जिम्मेदार 40

छीन ले मेरे हाथ से प्याला 41

मेरी छोटी-सी दुनिया है 42

सेवक 45

तुझे मंजूर नहीं है बिल्कुल 46

जब मैं छोटा था बहुत 47

संस्कृति की कविताएँ

उपवन-उपवन कहलाता है 49

मैं भी नहीं रुकूँगी 51

बाज़ार 53

बाज़ार मेरे घर में 55

हाय रे बाज़ार 57

जैसे पहनते हो-रंग-बिरंगे कपड़े 58

न करो बात सहारों की 60

हर मोड़ पर मेरा बाप खड़ा है 61

तुम कहते हो हवा गरम है 63

पत्थर जितना-जितना पथराता जाता है 65

चिड़िया 66

हर बार भाई के बीमार होने पर 67

उमा 69

अपेक्षाएँ स्वयं से पूरी हों तो कर लो 71

हर शख़्स का अपना-अपना अकेलापन है 72

मेरी तो कट जायेगी 73

रात को सुनती हूँ गायन जिनका 75

झुक गई 76

कुल्हाड़ी चलाते 77

अँधेरी दुनिया में 78

रक्षा के उपाय 79

किसान को पता क्या 80

खाया हुआ खाया 81

मेरा बाप 83

संबंध की कविताएँ

पहचान 86

माँ 87

अपने से दुश्मनी 90

मेरी माँ के सिले थे ओंठ 91

तुम्हारी याद 92

पिता तुम मनुष्य थे 94

पिता तुम्हें प्रणाम 97

घर में चुप्पी देख 100

सावन मनाने 101

एक-दूसरे को जी भरकर 102

बहुत समय तक मैं कैद रही 103

थक गया है बहुत 104

तुम्हारी असावधानियों से 107

सामान 109

'सपने में' 111

ग्रहण 112

भय लगता ही नहीं 115

रास्ता नहीं मिला, तो नहीं मिला 116

न बताएगा हाल-ए-दिल 117

कितने सावन बिताऊँ मैं 118

थकान 119

मिजाज़ 121

उलूक 122

दूसरी बच्ची 123

नियम तो सीख 124

यूँ सिकुड़कर मत बैठ 125

सुइयाँ चुभोता आया 126

क्यूँ हो गए अकेले तुम 127

मैंने बेच दिए हैं गहने 128

आना-जाना तो मेरा रहेगा, लेकिन तभी जब तैयारियाँ मुकम्मल हों 129

तुझसे रौशन है दुनिया मेरी 130

सुराख हो गए स्मृतियों में 131

न बड़ा बेचैनी मेरी 131

आते ही न किया कर 133

अपने ही घर में 134

शर्मिंदा होता-ये ज्यादा अच्छा ही हुआ 136

जी उठी थी मैं 137

आँख मिलाकर बात करने का सुख 138

माथे की दरारों से 139

दे दिया तो दे दिया 141

थककर कौन थक जाता है 142

अपने से बैर करने वाले 143

जिनको जो कुछ कहा जाता है 144

घर से आकर घर बनाना 145

नज़र 148

दुश्मनों ने जिंदगी सँवार दी 150

दुनिया की बात छोड़ 151

अब तो आदत में शुमार हो गया है 152

लेने आया था वह मुझसे 154

मैंने जितने पागलपन किये 155

दर्द की कविताएँ

दर्द की कोई सीमा नहीं होती 157

मरने वाला मर गया 158

दर्द पुराना 159

पश्चाताप 160

तलाशियाँ 161

कपट 162

थक गई हूँ 163